अट्ठारह

सेवकाई के वरदान

The Ministry Gifts

> पर हम में से हर एक को मसीह के वरदान के परिमाण से अनुग्रह मिला है...और उसने कितनों को *प्रेरित* नियुक्त करके, और कितनों को *भविष्यद्वक्ता* नियुक्त करके, और कितनों को *सुसमाचार सुनानेवाले* नियुक्त करके, और कितनों को *रखवाले* और *उपदेशक* नियुक्त करके दे दिया। जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सबके सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील-डौल एक न बढ़ जाएं (इफि. 4:7, 11-13, पर बल दिया गया है)।
>
> और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किये हैं, प्रथम *प्रेरित,* दूसरे *भविष्यद्वक्ता,* तीसरे *शिक्षक,* फिर *सामर्थ के काम करने वाले,* और *प्रधान* और *नाना प्रकार की भाषा बोलने वाले* (1 कुरि. 12:28 पर बल दिया गया है)।

सेवकाई के वरदान, जैसा अक्सर इन्हें कहा जाता है, कुछ विश्वासियों को दी गई वह बुलाहट या विविध योग्यताएं हैं जो उन्हें प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर या शिक्षक के पद पर खड़ा रहने के योग्य करती हैं। कोई भी स्वयं को इनमें से किसी भी पद पर अपने आप नहीं रख सकता है। इसके विपरीत, एक व्यक्ति परमेश्वर द्वारा बुलाया हुआ और वरदान प्राप्त होता है।

यह संभव है कि एक व्यक्ति इन पदों में से एक से अधिक को प्राप्त कर ले, लेकिन कुछ संयोजन ही व्यवहार्य हैं। उदाहरण के लिये, एक विश्वासी का पास्टर

और शिक्षक या भविष्यद्वक्ता और शिक्षक के रूप में बुलाया जाना संभव है। तौभी एक व्यक्ति का पास्टर और सुसमाचार प्रचारक के रूप में बुलाया जाना असंभव होगा क्योंकि पास्टर की सेवकाई में एक ही जगह पर रहकर झुण्ड की सेवा करने की ज़रूरत होती है, और इसी कारण वह सुसमाचार प्रचारक की बुलाहट को पूरा नहीं कर सकता, जिसे बार-बार यात्रा करनी पड़ती है।

यद्यपि ये पांचों कार्य भिन्न उद्देश्यों से दिये जाते हैं, तौभी वे सभी एक सामान्य उद्देश्यों से कलीसिया को दिये गए हैं-''सेवा के कार्य के लिए धर्मी जनों को तैयार करने हेतु'' (इफि. 4:12)।[60] '*प्रत्येक प्रभु के सेवक का लक्ष्य सेवा के कार्य के लिये। पवित्र लोगों को तैयार करने का होना चाहिए,* (जो ''धर्मी जन'' शब्द का अर्थ भी है) तथापि, प्राय: सेवकाई में रहने वाले लोग इस तरह से कार्य करते हैं मानो वे पवित्र लोगों को सेवा करने हेतु तैयार करने के लिये नहीं बुलाए गए हैं, बल्कि कलीसियाई सेवा में बैठे सांसारिक लोगों का मनोरंजन करने को। इन कार्यों में से किसी एक के लिए बुलाया गया व्यक्ति ''सेवा कार्य के लिए धर्मी जनों को तैयार करने'' में अपने सहयोग का बार-बार मूल्यांकन करता रहे। यदि प्रत्येक सेवक ऐसा करे, तो बहुत से उन असंख्य गतिविधियों से वंचित होंगे जिन्हें भ्रान्ति वश ''सेवकाई'' कहा जाता है।

क्या सेवकाई के कुछ वरदान केवल आरम्भिक कलीसिया के लिये ही थे?

Were Some Ministry Gifts Only for the Early Church?

सेवकाई के ये वरदान कलीसिया को कितने समय तक के लिये दिये जाएंगे? यीशु उन्हें तब तक देगा जब तक कि उसके पवित्र लोगों को इनकी ज़रूरत सेवा के लिए तैयार होने को होगी, उसके दूसरे आगमन तक। कलीसिया उन नवजात मसीहियों को लेती है जिन्हें बढ़ने की ज़रूरत होती है, और शेष हम सभी के पास आत्मिक परिपक्वता में बढ़ने का स्थान होता है।

दुर्भाग्यवश, कुछ यह परिणाम निकालते हैं कि आज दो तरह ही सेवकाइयां पाई जाती हैं-पास्टर और सुसमाचार प्रचारक-मानो परमेश्वर ने अपनी योजना को बदल दिया हो। नहीं, हमें अभी भी प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों की उतनी ही अधिक आवश्यकता है जितनी आरम्भिक कलीसिया में थी। हम अपने चारों ओर के संसार की अधिकांश कलीसियाओं के बीच इन वरदानों को इस कारण से नहीं देखते हैं क्योंकि यीशु ये वरदान *अपनी* कलीसिया को देता है न कि बनावटी अपवित्र, झूठे सुसमाचार वाली कलीसिया को। बनावटी कलीसिया में केवल वे ही लोग पाए जा सकते हैं जो कुछ सेवकाई के वरदानों की भूमिका को पूरा करने का व्यर्थ

60. यह इसे कहने का दूसरा तरीका है, ''यीशु मसीह के शिष्य बनाने के लिए।''

प्रयास करते हैं (अधिकांशत : पास्टर और कुछ सुसमाचार प्रचारक), लेकिन वे बहुत कम ही परमेश्वर की बुलाहट और अभिषिक्त सेवकाई वरदानों को प्रगट करते हैं जो यीशु *अपनी* कलीसिया को देता है। वे निश्चय ही सेवा कार्य के लिये पवित्र लोगों को तैयार नहीं कर रहे हैं, क्योंकि जिस सुसमाचार की घोषणा वे करते हैं, उसका परिणाम पवित्रता नहीं होता, यह केवल लोगों की इस विचारधारा को रखने में धोखा देता है कि वे क्षमा किये गए हैं, और इन लोगों में सेवा के लिए तैयार होने की इच्छा नहीं होती। उनमें स्वयं का इंकार करने और अपना क्रूस उठाने की कोई मंशा नहीं होती।

आप कैसे जानेंगे कि आपको बुलाया गया है?
How do You Know if You are Called?

आप में से कोई भी व्यक्ति यह कैसे जानेगा कि उसे इन कार्यों में से किसी एक के लिए बुलाया गया है? सर्वप्रथम और सबसे पहले, वह परमेश्वर की ओर से एक ईश्वरीय बुलाहट को अनुभव करेगा। एक निर्धारित कार्य को पूरा करने के लिए वह स्वयं पर बोझ का अनुभव करेगा। यह एक ऐसी आवश्यकता को देखने से कहीं अधिक है जिसे पूरा किया जा सकता हो। इसके विपरीत, यह एक परमेश्वर प्रदत्त भूख है जो एक व्यक्ति को निर्धारित सेवकाई करने के लिए *बाध्य* करती है। यदि उसे सच में परमेश्वर की ओर से बुलाया गया है, तो अपनी बुलाहट को पूरा करने तक वह संतुष्ट नहीं होता। ऐसा एक व्यक्ति या लोगों की समिति द्वारा नियुक्त किये जाने पर नहीं होता। परमेश्वर ही एकमात्र बुलाहट को देता है।

दूसरा, सच में बुलाया गया व्यक्ति परमेश्वर द्वारा दिये गए कार्य को पूरा करने के लिए स्वयं को परमेश्वर द्वारा सुसज्जित पाएगा। इन पांचों कार्यों में एक अलौकिक अभिषेक जुड़ा होता है जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया होता है। बुलाहट के साथ-साथ अभिषेक भी आता है। *यदि अभिषेक नहीं है तो बुलाहट भी नहीं है।* कोई भी किसी निर्धारित सेवकाई को करने के लिए प्रेरित हो सकता है, स्वयं को शिक्षित करने और उस सेवकाई के लिए तैयार करने को चार वर्ष के लिए बाइबल स्कूल में भी शामिल हो सकता है, लेकिन परमेश्वर की ओर से अभिषेक के बिना, उसके पास सफलता का कोई अवसर नहीं होता।

तीसरा, वह यह अनुभव करेगा कि उसके उस विशिष्ट वरदान पर अभ्यास करने के लिए परमेश्वर ने उसके लिए सुअवसर के एक द्वार को खोला है। इस तरह से वह स्वयं को विश्वासयोग्य प्रमाणित कर सकता है, और अन्ततः उसे बड़े उत्तरदायित्व, सुअवसर और वरदान सौंप जाएंगे।

यदि एक व्यक्ति एक भीतरी ईश्वरीय दबाव और पांचों वरदानों में से किसी एक के लिए बुलाहट को अनुभव नहीं करता है, या यदि वह परमेश्वर द्वारा दिये

गए कार्य को पूरा करने के लिए किसी विशिष्ट अभिषेक के प्रति सचेत नहीं है, और यदि उसके विचार से उसमें कुछ ऐसी प्रतिभा है जिस पर अभ्यास करने के लिए उसे कोई अवसर नहीं मिलता, तो उस व्यक्ति को ऐसा कुछ करने का प्रयास नहीं करना चाहिए जिसके लिए परमेश्वर ने उसे न बुलाया हो। इसके विपरीत, उसे अपनी स्थानीय कलीसियाई देह में अपने आस-पास और अपने कार्यस्थल पर एक आशीष बनने का प्रयास करना चाहिए। बेशक उसे ''पांच-गुणा'' सेवकाई के लिये न बुलाया गया हो, तौभी परमेश्वर ने उसे जो वरदान दिये हैं उनका प्रयोग करते हुए सेवा करने को उसे बुलाया गया है, और उसे स्वयं को विश्वासयोग्य प्रमाणित करने का प्रयास करना चाहिए।

यद्यपि पवित्रशास्त्र पांच सेवकाई के वरदानों के बारे में बताता है, इसका अर्थ यह नहीं निकलता कि प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास इनमें से कोई एक वरदान है उसकी अपनी एक विशिष्ट सेवकाई होगी। पौलुस ने लिखा कि ''कई तरह की सेवकाई'' हैं (1कुरि. 12:5), सेवकों के बीच भिन्नता बनाते हुए कि कौन किस कार्य के लिए है। इसके अतिरिक्त, इन कार्यों को करने वालों पर अभिषेक के कई स्तर प्रतीत होते हैं, जिससे हम अभिषेक की मात्रा के द्वारा प्रत्येक कार्य को श्रेणीबद्ध कर सकें। उदाहरण के लिए, कुछ ऐसे शिक्षक हैं, जो अन्य शिक्षकों की तुलना में अधिक अभिषिक्त लगते हैं। यही चीज़ अन्य सेवकाई वरदानों के साथ भी सत्य है। मेरा व्यक्तिगत रूप से मानना है कि कोई भी सेवक उन चीज़ों को कर सकता है जिसके परिणाम में उसकी सेवकाई पर अभिषेक बढ़ेगा, जैसे समय बीतने के साथ साथ स्वयं को विश्वासयोग्य प्रमाणित करना और स्वयं को परमेश्वर के प्रति गहराई से अर्पित करना।

प्रेरित के कार्य का निकट सर्वेक्षण

A Closer Look at the Office of Apostle

अंग्रेज़ी का *अपोस्टल (प्रेरित)* शब्द यूनानी के *अपोस्टोलोस* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''भेजा गया व्यक्ति।'' एक सच्चा नये नियम का प्रेरित वह विश्वासी है जिसे कलीसियाओं की स्थापना करने को एक निश्चित स्थान या स्थानों पर ईश्वरीय रूप से भेजा जाता है। वह परमेश्वर की ''इमारत'' की आत्मिक नींव को डालता है और किसी तरह से ''सामान्य ठेकेदार'' के समान होता है, प्रेरित पौलुस ने स्वयं लिखा:

> क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं, तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो। परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैंने *बुद्धिमान राजमिस्त्री* की नाईं नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है : परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है (1 कुरि. 3:9-10अ, पर बल दिया गया है)।

एक ''बुद्धिमान राजमिस्त्री'' या सामान्य ठेकेदार समस्त इमारत की प्रक्रिया का निरीक्षण करता है- वह कार्य के समाप्त किये जाने की कल्पना करता है। वह बढ़ई और ईंट उठानेवाले के समान निपुण नहीं होता। *संभव* है कि वह बढ़ई या ईंट उठानेवाले के समान कार्य करने के योग्य हो, लेकिन संभवत: उनके समान उत्तम नहीं। इसी तरह से एक प्रेरित में एक पास्टर या सुसमाचार-प्रचारक का कार्य करने की योग्यता हो सकती है, लेकिन कलीसियाओं की स्थापना करने तक के सीमित समय के लिये (प्रेरित पौलुस सामान्यता 6 महीने से 3 वर्षों तक एक ही स्थान पर ठहरा रहा)।

प्रेरित कलीसियाओं की स्थापना करने और उसके बाद उनका निरीक्षण करने में श्रेष्ठ होता है। एक प्रेरित अपने द्वारा स्थापित प्रत्येक मण्डली में चरावाही का कार्य करने को प्राचीनों/पास्टरों/निरीक्षकों को नियुक्त करने के प्रति उत्तरदायी होता है (देखें प्रेरित. 14:21-23; तीतु. 1:5)।

सच्चे और झूठे प्रेरित
True and False Apostles

ऐसा लगता है कि आज के समय में प्रभु के कुछ सेवक कलीसियाओं पर अधिकार रखने तथा प्रेरित के रूप में अपने बुलाए जाने की एकदम घोषणा करने की इच्छा रखते है, लेकिन अधिकांश को एक बड़ी समस्या रहती है। चूंकि उन्होंने कलीसियाओं (शायद एक या दो) को स्थापित नहीं किया होता और उनमें एक बाइबल आधारित प्रेरित के वरदान या अभिषेक नहीं होता, वे ऐसे भोले भाले पास्टरों को ढूंढ लेते हैं जो उन्हें अपनी कलीसियाओं पर अधिकार लेने दें। यदि आप एक पास्टर हैं तो आप इन स्वयं को ऊंचा उठाने वाले शक्ति के भूखे झूठे प्रेरितों से मूर्ख न बनें। वे सामान्यता भेड़ की खाल में भेड़िये होते हैं। अक्सर वे धन के पीछे रहते हैं। पवित्रशास्त्र झूठे प्रेरितों के विरुद्ध चेतावनी देता है (देखें 2 कुरि. 11:13; प्रका. 2:2)। यदि वे आपसे कहें कि वे प्रेरित हैं, तो यह इस बात का संकेत है कि वे प्रेरित नहीं हैं। उनके काम इस बारे में बता देंगे।

एक पास्टर जो अपनी कलीसिया की स्थापना करके वहां वर्षों तक पास्टर के रूप में कार्य करता है, वह प्रेरित नहीं है। इस तरह के पास्टरों को *संभवत:* ''प्रेरितिक पास्टर'' कहा जा सकता है क्योंकि उन्होंने अपनी कलीसिया का आरम्भ स्वयं किया होता है। वे प्रेरित के कार्य (पद) पर खड़े नहीं रहते क्योंकि एक प्रेरित कलीसियाओं की स्थापना करना जारी रखता है। या सच में परमेश्वर द्वारा भेजा गया एक अभिषिक्त ''मिशनरी'' जैसा आजकल उन्हें कहा जाता है, जिसकी मुख्य बुलाहट कलीसियाओं की स्थापना करने की होती है, वह प्रेरित के पद पर खड़ा रह पाएगा। दूसरी ओर, वे मिशनरी जो बाइबल स्कूलों की स्थापना करने या पास्टरों को प्रशिक्षण देने का कार्य करते हैं वे प्रेरित नहीं बल्कि शिक्षक होंगे।

एक सच्चे प्रेरित की सेवकाई की विशेषता अलौकिक चिन्ह और चमत्कारों से जानी जाती है, जो उसके कलीसियाओं की स्थापना करने में सहायक हैं। पौलुस ने लिखा :

> यद्यपि मैं कुछ भी नहीं, तौभी उन बड़े से बड़े प्रेरितों से किसी बात में कम नहीं हूं। प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों, और अद्‌भुत कामों, और सामर्थ के कामों से दिखाए गए (2 कुरि. 12:11ब-12)।

यदि एक व्यक्ति की सेवकाई में चिन्ह और चमत्कार नहीं होते तो वह प्रेरित नहीं होता है। निस्संदेह सच्चे प्रेरित बहुत कम ही होते हैं, और वे बनावटी, अपवित्र और झूठे सुसमाचार वाली कलीसिया में नहीं पाए जाते। मैंने उन्हें प्रमुख रूप से संसार के उन स्थानों पर पाया है जहां अभी भी बहुत कम सुसमाचार पाया जाता है।

प्रेरित का ऊंचा दर्जा

The High Rank of the Apostle

सेवकाई के वरदानों की नये नियम की दोनों सूचियों में प्रेरितों के कार्यों की सूची को सबसे पहले दिया गया है, यह संकेत देते हुए कि यह सबसे ऊंची बुलाहट है (देखें इफि. 4:11; 1कुरि. 12:28)।

कोई भी अपनी सेवकाई का आरम्भ एक प्रेरित के रूप में नहीं करता है। एक व्यक्ति को संभव है कि *अन्ततः* एक प्रेरित कहा जाए, लेकिन वह उस कार्य का आरम्भ नहीं करेगा। उसे वर्षों तक प्रचार करने और शिक्षा देने के पश्चात् स्वयं को सर्वप्रथम विश्वासयोग्य होने के लिए प्रमाणित करना है, तत्पश्चात् वह उस कार्य के लिए खड़ा होगा जो परमेश्वर ने उसके लिए तैयार किया है। पौलुस को एक प्रेरित होने की बुलाहट अपनी मां के पेट से ही मिली थी, लेकिन उस कार्य को पूरी तरह से करने से पूर्व उसने कई वर्ष पूर्णकालिक सेवकाई में बिताए थे (देखें गल. 1:15-2:1)। उसने वास्तव में आरम्भ एक शिक्षक और भविष्यद्वक्ता के रूप में किया था (देखें प्रेरित. 13:1-2), और बाद में उसे प्रेरित के रूप में पदोन्नति मिली थी, जब उसे पवित्र आत्मा द्वारा भेजा गया था (देखें प्रेरित. 14:14)।

प्रेरितों के काम 1:15-26; 14:14; रोमि. 16:7; 2 कुरि. 8:23; गल. 1:17-19; फिलि. 2:25 और 1 थिस्स. 1:1 के साथ 2:6 में हम पौलुस और मूल 12 शिष्यों के अतिरिक्त अन्य प्रेरितों का वर्णन भी पाते हैं (2 कुरि. 8:23 और फिलि. 2:25 में अनुवादित शब्द *संदेशवाहक* यूनानी का *अपोस्तोलोस* है)। यह इस थियोरी को अलग कर देता है कि प्रेरितिक कार्य केवल बारह व्यक्तियों तक ही सीमित था।

तौभी, केवल बारह प्रेरितों को ही ''मेमने के प्रेरित'' के रूप में वर्गीकृत किया

जा सकता है और केवल उन बारहों का ही मसीह के सहस्राब्दिक राज्य में विशेष स्थान होगा (देखें मत्ती 19:28; प्रका. 21:14)। अब हमें पतरस, याकूब और यूहन्ना जैसे प्रेरितों की आवश्यकता नहीं है क्योंकि बाइबल का प्रकाशन पूरा हो गया है। तथापि, आज भी हमें ऐसे प्रेरितों की आवश्यकता है जो पवित्र आत्मा की सामर्थ से कलीसियाओं की स्थापना करते हैं, जैसा पौलुस और अन्य प्रेरितों ने भी किया था, जिसका वर्णन प्रेरितों के काम की पुस्तक में है।

भविष्यद्वक्ता का कार्य

The Office of Prophet

भविष्यद्वक्ता वह होता है जो अलौकिक प्रकाशन को प्राप्त कर ईश्वरीय प्रेरणा से बोलता है। स्वाभाविक रूप में, उसका प्रयोग भविष्यद्वाणी के आत्मिक वरदान के साथ-साथ प्रकाशन के वरदानों में भी होता है : बुद्धि का वचन, ज्ञान का वचन, और आत्माओं की परख।

किसी भी विश्वासी का प्रयोग आत्मा की इच्छा से भविष्यद्वाणी के वरदान में परमेश्वर द्वारा किया जा सकता है, लेकिन यह उसे भविष्यद्वक्ता नहीं बनाता। एक भविष्यद्वक्ता सर्वप्रथम प्रभु का वह सेवक होता है जो एक अभिषेक के साथ प्रचार व शिक्षा देने का कार्य करता है। यद्यपि एक भविष्यद्वक्ता की बुलाहट दूसरे नम्बर पर ऊंचे स्थान पर आती है (1 कुरि. 12:28 के क्रम को देखें), एक पूर्ण समय के सेवक को भी तब तक भविष्यद्वक्ता के कार्य पर नहीं रखा जा सकता है जब तक कि वह कुछ वर्षों तक सेवकाई में न रहा हो। यदि वह उस कार्य पर खड़ा होता है, तो उसके पास कुछ ऐसे अलौकिक उपकरण होंगे जो इसके साथ साथ कार्य करेंगे।

नये नियम में दो व्यक्ति यहूदा और सीलास का नाम भविष्यद्वक्ता के रूप में लिया गया है। प्रेरित. 15:32 में हम पढ़ते हैं कि उन्होंने अन्ताकिया की कलीसिया में एक विस्तृत भविष्यद्वाणी की थी:

> और यहूदा और सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत बातों से भाइयों को उपदेश देकर स्थिर किया।

नये नियम के अन्य भविष्यद्वक्ता का उदाहरण अगबुस होगा। प्रेरितों के काम 11:27-28 में हम पढ़ते हैं :

> उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए। उन में से अगबुस नाम एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा।

ध्यान दें कि अगबुस को बुद्धि का वचन दिया गया था भविष्य के बारे में उस

पर कुछ चीज़ को प्रगट किया गया था। निस्संदेह, अगबुस भविष्य में होने वाली प्रत्येक चीज़ के बारे में नहीं जानता था, वह केवल वही जानता था जिसे आत्मा ने उस पर प्रगट करना चाहा था।

प्रेरितों के काम 21:10-11 में, अगबुस की सेवकाई द्वारा कार्यान्वित होने वाले बुद्धि के वचन का एक अन्य उदाहरण है। इस बार यह एक व्यक्ति, पौलुस के लिए था:

> जब हम वहां बहुत दिन रह चुके तो अगबुस नाम एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया। उसने हमारे पास आकर पौलुस का पटका लिया, और अपने हाथ पांव बान्धकर कहा; ''पवित्र आत्मा यह कहता है, कि 'जिस मनुष्य का यह पटका है, उसको यरूशेलम में यहूदी इसी रीति से बान्धेंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे'।''

नई वाचा के अन्तर्गत भविष्यद्वक्ताओं की ओर से व्यक्तिगत मार्गदर्शन को खोजना क्या पवित्रशास्त्र के अनुसार है? नहीं। इसका कारण सभी विश्वासियों में पवित्र आत्मा का होना है जो उनका मार्गदशन करता है। एक भविष्यद्वक्ता को एक विश्वासी को केवल *पुष्टि* करानी चाहिए कि जो कुछ वह पहले से जानता है वह उसकी अपनी आत्मा में परमेश्वर का मार्गदर्शन है। उदाहरणस्वरूप, जब अगबुस ने पौलुस के लिए भविष्यद्वाणी की, उसने इस बात का उसे कोई निर्देश नहीं दिया कि उसे क्या करना है; उसने केवल उस बात की पुष्टि की जिसे पौलुस कुछ समय बाद स्वयं जान जाता।

जैसा पहले भी कहा गया, एक प्रेरित के रूप में सेवकाई में बुलाए जाने के पूर्व पौलुस एक भविष्यद्वक्ता (और शिक्षक) के कार्यकर्त्ता के रूप में खड़ा हुआ (देखें प्रेरित. 13:1)। हम जानते हैं कि गल. 1:11-12 के अनुसार पौलुस ने प्रभु की ओर से प्रकाशनों को प्राप्त किया और उसे कई दर्शन भी मिले थे (देखें प्रेरित. 9:1-9; 18:9-10; 22:17-21; 23:11; 2 कुरि. 12:1-4)।

जैसा झूठे प्रेरितों के साथ है, हम सच्ची कलीसियाओं में झूठे भविष्यद्वक्ता नहीं पाते। झूठी कलीसिया सीलास, यहूदा और अगबुस जैसे भविष्यद्वक्ताओं से दूर रहती है। इसका कारण, सच्चे भविष्यद्वक्ताओं द्वारा उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर की नाराज़गी को उन पर प्रगट करना है (जैसा प्रकाशितवाक्य के प्रथम दो अध्यायों में यूहन्ना ने एशिया माइनर की बहुत सी कलीसियाओं में किया था)। झूठी कलीसिया उसके लिए खुली नहीं है।

शिक्षक का कार्य

The Office of Teacher

1कुरिन्थियों 12:28 के क्रम के अनुसार, शिक्षक का कार्य तीसरी सबसे ऊंची

बुलाहट वाला है। एक शिक्षक वह होता है जिसका परमेश्वर के वचन को सिखाने के लिए अलौकिक रूप से अभिषेक किया जाता है। एक व्यक्ति द्वारा बाइबल की शिक्षा देने का अर्थ यह नहीं कि वह नये नियम का शिक्षक है। कुछ लोग सरलता से सिखाते हैं क्योंकि वे स्वयं को इसके लिए बाध्य पाते हैं, लेकिन एक व्यक्ति जो शिक्षक के कार्य पर खड़ा होता है वह स्वयं को सिखाने के लिए अलौकिक रूप से सम्पन्न पाता है। उसे प्राय: परमेश्वर के वचन से संबन्धित अलौकिक प्रकाशन दिये जाते हैं और वह बाइबल की व्याख्या इस तरह से कर सकता है जिसे समझे जाने के साथ साथ कार्यान्वित भी किया जा सके।

अपुल्लोस नये नियम का एक ऐसा उदाहरण है जो इस कार्य पर खड़ा होता है। पौलुस ने 1कुरिन्थियों में अपनी प्रेरितिक सेवकाई और अपुल्लोस की शिक्षक सेवकाई की तुलना यह कहते हुए की है :

> मैंने लगाया *अपुल्लोस ने सींचा,* परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया...मैंने नेव डाली, और *दूसरा उस पर रद्दा रखता है* (1 कुरि. 3:6,10ब, पर बल दिया गया है)।

अपुल्लोस शिक्षक ने मूल रूप से न तो पौधों को लगाया था और न ही नींव को डाला था। इसके विपरीत, उसने नये अंकुरों को परमेश्वर के वचन से सींचा था और मौजूदा नींव पर दीवारों को बनाया था।

प्रेरित. 18:27-28 में भी अप्पुलोस का वर्णन किया गया है :

> और जब उसने (अपुल्लोस ने) निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें, और उसने पहुंचकर वहां उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था। क्योंकि वह पवित्रशास्त्र के प्रमाण दे देकर, कि यीशु ही मसीह है, बड़ी प्रबलता से यहूदियों को सब के सामने निरुत्तर करता रहा।

ध्यान दें कि अपुल्लोस ने उन लोगों की ''बड़ी सहायता'' की जो पहले से ही मसीही थे और यह कि उसकी शिक्षा को ''शक्तिशाली'' कहा गया था। अभिषिक्त शिक्षा सदैव शक्तिशाली होती है।

कलीसिया के लिये चमत्कारी कार्यों और चंगाई के वरदानों की तुलना में शिक्षण सेवकाई अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसी कारण 1कुरिन्थियों 12:28 में इसे उन दोनों से पहले सूचीगत किया गया है :

> और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किये हैं; *प्रथम* प्रेरित, *दूसरे* भविष्यद्वक्ता, *तीसरे* शिक्षक, *फिर* सामर्थ के काम करने वाले, *फिर* चंगा करने वाले (पर बल दिया गया है)।

दुर्भाग्यवश, विश्वासी कई बार वचन की उस स्पष्ट शिक्षा को सुनने की अपेक्षा चंगाई को देखकर अधिक आकर्षित होते हैं जो कि उनके जीवनों में आत्मिक विकास और पवित्रता को उत्पन्न करने वाली होती है।

बाइबल-प्रचार और शिक्षा दोनों के बारे में बोलती है। शिक्षा अधिक तर्कसंगत और आदेशात्मक है जबकि प्रचार अधिक प्रेरक और प्रेरणा देने वाला है। सुसमाचार प्रचारक सामान्यता प्रचार करते हैं। यह दुखद है कि कुछ विश्वासी शिक्षा के महत्व को नहीं समझते। कुछ यह भी सोचते हैं कि वे ही वक्ता अभिषिक्त होते हैं जो तेज़ आवाज में प्रचार करते हैं! ऐसा नहीं है।

यीशु एक अभिषिक्त शिक्षक का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। उसकी शिक्षा उसकी सेवकाई का इतना प्रधान भाग थी कि बहुतों ने उसे ''गुरू'' कहा (मत्ती 8:19; मर. 5:35; यूह. 11:28)।

शिक्षकों और शिक्षा के अतिरिक्त अध्ययन के लिये देखें प्रेरित. 2:42; 5:21, 25, 28, 42; 11:22-26; 13:1; 15:35; 18:11; 20:18-20; 28:30, 31; रोमि. 12:6-7; 1कुरि. 4:17; गल. 6:6; कुलु. 1:28; 1तीमु. 4:11-16; 5:17; 6:2; 2 तीमु. 1:11; 2:2 और याकू. 3:1 अन्तिम पवित्रशास्त्रीय सूची हमें बताती है कि शिक्षक एक कठोर न्याय का सामना करेंगे और इसी कारण उन्हें इस बारे में अधिक सतर्क रहना चाहिए कि वे क्या सिखाते हैं। उन्हें केवल वचन की शिक्षा देनी चाहिए।

सुसमाचार प्रचारक का कार्य
The Office of Evangelist

सुसमाचार प्रचारक वह होता है जो सुसमाचार का प्रचार करने के लिए अभिषिक्त होता है। उसके संदेश लोगों के पश्चात्ताप करने और यीशु मसीह में विश्वास करने में नेतृत्व करने वाले होते हैं। वे चमत्कारों से जुड़े होते हैं जो अविश्वासियों को आकर्षित करते और अपने संदेश की सच्चाई के प्रति उन्हें बाध्य करते हैं।

निस्संदेह आरम्भिक कलीसिया में बहुत से प्रचारक होते थे, लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक में केवल एक ही व्यक्ति का नाम सुसमाचार प्रचारक के रूप में सूची में दिया गया है। उसका नाम फिलिप्पुस था : ''दूसरे दिन हम वहां से चलकर कैसरिया में आए, और *फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक* के घर में जो सातों में से एक था, जाकर उसके यहां रहे'' (प्रेरित. 21:8, पर बल दिया गया है)।

पौलुस ने अपनी सेवकाई का आरम्भ एक सेवक (या शायद ''डीकन'') के रूप में किया (देखें प्रेरित. 6:1-6)। कलीसिया के सताव के समय में जो कि स्तिफनुस के शहीद होने के समय से जुड़ा था, उसे सुसमाचार प्रचारक के रूप में पदोन्नति मिली थी। उसका सामरिया में पहला प्रचार किया गया सुसमाचार :

> और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से झोले के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किये गए। और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ (प्रेरित. 8:5-8)।

ध्यान दें कि पौलुस का एक संदेश था-मसीह। उसके लक्ष्य का आरम्भ शिष्य बनाने के साथ हुआ था, अर्थात् मसीह के आज्ञाकारी अनुयायियों को। उसने मसीह की घोषणा एक चमत्कार करने वाले, परमेश्वर के पुत्र, प्रभु, उद्धारकर्त्ता और जल्द आनेवाले न्यायी के रूप में की।

इस पर भी ध्यान दें कि फिलिप्पुस अलौकिक चिन्हों और चमत्कारों से सुसज्जित था, जो उसके संदेश में प्रमुख थे। सुसमाचार प्रचारक के कार्य को करने वाला चंगाई के वरदानों और अन्य आत्मिक वरदानों से अभिषिक्त होगा। झूठी कलीसिया में केवल झूठे सुसमाचार प्रचारक होते हैं जो एक झूठे सुसमाचार की घोषणा करते हैं। आज संसार इस तरह के सुसमाचार प्रचारकों से भरा है, और यह संभावित है कि परमेश्वर चमत्कारों और चंगाई के साथ उनके संदेश की पुष्टि नहीं कर रहा है। इसका एकमात्र कारण यह है कि वे उसके सुसमाचार का प्रचार नहीं कर रहे हैं। वे वास्तव में मसीह का प्रचार नहीं करते। वे सामान्यता लोगों की आवश्यकताओं और इस बारे में प्रचार करते हैं कि मसीह उन्हें कैसे बहुतायत का जीवन दे सकता है। या वे उद्धार के एक ऐसे सूत्र का प्रचार करते हैं जिसमें पश्चात्ताप को शामिल नहीं किया जाता। वे लोगों को एक ऐसे झूठे वार्त्तालाप की ओर लेकर जाते हैं जो उनकी दोष भावना का तो उपचार करता है लेकिन उन्हें बचाता नहीं है। उनके प्रचार का परिणाम यह होता है कि लोगों के पास नया जन्म पाने का अवसर बहुत कम होता है, क्योंकि अब वे उस चीज़ को प्राप्त करने की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं करते जो उनके विचार से उनके पास पहले से ही है।

इस तरह के सुसमाचार प्रचारक वास्तव में शैतान के राज्य का निर्माण करने में सहायक होते हैं।

इफिसियों 4:11 के समान 1 कुरि. 12:28 में सुसमाचार प्रचारक के कार्य को अन्य सेवकाई के वरदानों के साथ सूचीगत नहीं किया गया है। तौभी, मेरा यह मानना है कि ''चमत्कारों और चंगाई के वरदानों'' का संदर्भ सुसमाचार प्रचारक के कार्य पर लागू होता है क्योंकि ये फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक की सेवकाई की विशेषताएं थीं और यह किसी भी सुसमाचार प्रचारक की सेवकाई को अलौकिक प्रमाणिकता प्रदान करेगी।

बहुत से जो स्वयं को सुसमाचार प्रचारक कहते हुए एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया में जाते हैं, वास्तव में सुसमाचार प्रचारक नहीं होते हैं, क्योंकि वे कलीसियाई इमारतों में केवल मसीहियों में ही प्रचार करते हैं, और वे चंगाई व चमत्कार के वरदानों से सुसज्जित नहीं होते हैं। (कुछ इन वरदानों के होने का ढोंग करते हैं, परन्तु वे केवल भोलों को ही मूर्ख बना सकते हैं। उनके सबसे बड़े चमत्कार में लोगों को अस्थाई रूप से गिराना होता है जब वे उन्हें पीछे की ओर धकेलते हैं।) ये यात्री सेवक शिक्षक या प्रचारक या प्रोत्साहक हो सकते हैं (देखें रोमि. 12:8), लेकिन वे सुसमाचार प्रचारक के कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होते। तौभी, यह संभव है कि परमेश्वर एक व्यक्ति की सेवकाई का आरम्भ एक प्रोत्साहक या प्रचारक के रूप में कर सकता है और तत्पश्चात् वह उसे सुसमाचार प्रचारक के रूप में पदोन्नति देता है।

सुसमाचार प्रचारक के कार्य के संबन्ध में अधिक जानकारी के लिए फिलिप्पुस की सेवकाई के एक विवरण प्रेरित 8:4-14 को पढ़े। वहां चंगाई के वरदानों की आपसी-निर्भरता पर ध्यान दें (विशिष्ट रूप से 14-25 पदों को देखें) और इस पर भी कि फिलिप्पुस ने न केवल एक बड़े जन समूह में सुसमाचार का प्रचार किया बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी वह लोगों तक गया (देखें प्रेरित. 8:25-39)।

ऐसा लगता है कि सुसमाचार प्रचारक अपने द्वारा परिवर्तित किये हुओं को ही बपतिस्मा देने को नियुक्त किये गए थे, लेकिन वे नये विश्वासियों को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देने का कार्य नहीं करते थे। उनका प्राथमिक उत्तरदायित्व प्रेरित या पास्टर/प्राचीन/निरीक्षक का ही होगा।

पास्टर का कार्य

The Office of Pastor

पहले के दो अध्यायों में, मैंने एक पास्टर की बाइबल संबन्धी भूमिका की तुलना औसतन संस्थागत पास्टर से की थी। तौभी, पास्टर की सेवकाई के बारे में कहने को बहुत कुछ है।

पवित्रशास्त्र पास्टर के कार्य के बारे में जो कहता है उसे पूर्ण रूप से समझने के लिए हमारा तीन कुंजी अथवा प्रमुख यूनानी शब्दों को समझाना ज़रूरी हैं—(1) *पायमैन,* (2) *प्रेसब्युटोरोस* (3) *अध्यक्ष* या *बिशप। पॉयमैन* शब्द नये नियम में अट्ठारह बार मिलता है और सत्रह बार इसका अनुवाद *चरवाहे* के रूप में किया गया है और एक बार *पास्टर* के रूप में। *पॉयमैन* क्रिया में ग्यारह बार मिलता है और इसका अनुवाद अधिकांश बार *चरवाहे* के रूप में किया जाता है।

यूनानी शब्द *प्रेसब्युटोरोस* नये नियम में छियासठ बार मिलता है। इनमें से साठ बार इसका अनुवाद *प्राचीन* या *प्राचीनों* के रूप में किया गया है।

अन्ततः यूनानी शब्द *एपिस्कोपोस* नये नियम में पांच बार पाया जाता है, और उनमें

से चार बार उसका अनुवाद *निरीक्षक* के रूप में किया गया है। किंग जेम्स संस्करण इसका अनुवाद *बिशप* के रूप में करता है।

ये तीनों शब्द कलीसिया में एक ही पदवी का उल्लेख करते हैं, और इनका प्रयोग बारी-बारी से किया जाता है। जब कभी भी प्रेरित पौलुस ने कलीसियाओं की स्थापना की, उसने उन प्राचीनों *(प्रेसब्युटोरोस)* को नियुक्त किया जिन्हें उसने स्थानीय मण्डलियों की देख-रेख करने को छोड़ा था (देखें प्रेरित. 14:23, तीतु. 1:5)। उनका उत्तरदायित्व अध्यक्षों (एपिस्कोपोस) और चरवाहों *(पायमेनियो)* के रूप में अपने झुण्ड के लिए कार्य करने का था। उदाहरण के लिए, प्रेरित. 20:17 में हम पढ़ते हैं :

> और उसने मीलेतुस से इफिसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के *प्राचीनों* को बुलाया (पर बल दिया गया है)।

और पौलुस ने उन कलीसियाई प्राचीनों से क्या कहा?

> इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें *अध्यक्ष* (एपिस्कोपोस) ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की *रखवाली* (पायमेनियो) करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है (प्रेरित. 20:28, पर बल दिया गया है)।

तीन यूनानी शब्दों के विनिमय प्रयोग पर ध्यान दें। ये तीन भिन्न कार्य (पद) नहीं हैं। पौलुस ने *प्राचीनों* को बताया कि वे *अध्यक्ष* थे जिन्हें *चरवाहों (रखवालों)* के रूप में कार्य करना था।

पतरस ने अपनी पहली पत्री में लिखा :

> तुम में जो *प्राचीन* हैं, मैं उनकी नाईं प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होने वाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं कि परमेश्वर के उस झुंड की जो तुम्हारे बीच में है *रखवाली* (पायमेनियो) करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर। और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिए आदर्श बनो। और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं (पतरस 5:1-4, पर बल दिया गया है)।

पतरस ने *प्राचीनों* को अपने झुंड की *रखवाली* करने को कहा। यहां जिस क्रिया का अनुवाद (इसके संज्ञा रूप में) *रखवाला* किया गया है उसी का इफिसियों 4:11 में *पास्टर* के रूप में किया गया है:

> और उसने (यीशु ने) कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को *रखवाले* और

उपदेशक नियुक्त करके दे दिया (पर बल दिया गया है)।

यह हमारा इस विश्वास में भी नेतृत्व करता है कि प्राचीन और पास्टर एक समान हैं।

पौलुस ने तीतुस 1:5-7 में *प्राचीन* (प्रेसब्युटोरोस) और *अध्यक्ष* (एपिस्कोपोस) शब्दों का प्रयोग भी बार-बार किया है :

> मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर *प्राचीनों* को नियुक्त करे...क्योंकि *अध्यक्ष* को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए (पर बल दिया गया है)।

अत: इस बारे में विवाद करना उपयुक्त नहीं हो सकता कि पास्टर, प्राचीन और अध्यक्ष के कार्य एक समान नहीं होते। नये नियम की पत्रियों में अध्यक्ष और प्राचीन के बारे में लिखी गई प्रत्येक चीज़ इसी कारण पास्टर पर भी लागू होती है।

कलीसियाई शासन

Church Governance

उपरोक्त पवित्रशास्त्र के पदों से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीनों/पास्टरों/अध्यक्षों को न केवल कलीसिया की आत्मिक दृष्टि दी गई है, बल्कि उन्हें शासकीय अधिकार भी दिया गया है। बिल्कुल सरल सी बात है कि प्राचीन पास्टर अध्यक्ष शासन में हैं, और कलीसिया के सदस्यों को स्वयं को उनके अधीन करना चाहिए।

> अपने अगुवों की मानो, और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनकी नाई तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा (इब्रा. 13:17)।

निस्संदेह, किसी भी मसीही को ऐसे पास्टर के अधीन नहीं होना चाहिए जो परमेश्वर के अधीन न हो, लेकिन उसे यह भी जानना चाहिए कि कोई भी पास्टर पूर्ण अथवा सिद्ध नहीं होता।

पास्टरों/प्राचीनों/अध्यक्षों का अपनी कलीसियाओं पर उसी तरह से अधिकार होता है जैसे एक पिता का अपने परिवार पर होता है:

> सो चाहिए कि अध्यक्ष...अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लड़केवालों को सारी गंभीरता से आधीन रखता हो। (जब कोई अपने घर ही एक प्रबन्ध करना न जानता हो, तो *परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्योंकर करेगा।* (1 तीमु. 3:2-5, पर बल दिया गया है)।

पौलुस आगे कहता है,

जो प्राचीन (पास्टर/अध्यक्ष) *अच्छा प्रबन्ध करते हैं*, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं (1 तीमु. 5:17, पर बल दिया गया है)।

स्पष्ट है कि प्राचीन कलीसिया पर शासन करते हैं।

गैर-पवित्रशास्त्रीय प्राचीन

Unscriptural Elders

अधिकांश कलीसियाएं अपने शासित ढांचे को बाइबल आधारित मानती हैं क्योंकि उनके पास शासन करने वाले प्राचीनों का समूह होता है, लेकिन उनकी समस्या यह है कि प्राचीनों के बारे में उनकी धारण सही नहीं होती। उनके प्राचीनों को नियमित रूप से चुना जाता है और वे मण्डली में ही परिक्रमा करते रहते हैं। उन्हें प्राय: ''प्राचीनों का बोर्ड'' कहा जाता है। लेकिन इस तरह के लोग बाइबल की परिभाषा से प्राचीन नहीं होते हैं। यदि हम उन आवश्यकताओं की जांच करें जिनकी गणना पौलुस ने एक व्यक्ति में प्राचीन होने के लिए की है, तो यह स्पष्ट हो जाता है। पौलुस ने लिखा कि एक प्राचीन कलीसिया में एक पूर्णकालिक, और इसी कारण वेतन प्राप्त, शिक्षण/प्रचार और शासन के पद को प्राप्त करता है (देखें 1तीमु. 3:4-5; 5:17-18; तीतु. 1:19)। कलीसिया में बैठने वाले बहुत कम लोग ही ''प्राचीन बोर्ड'' में बैठने की योग्यता को पूरा करते हैं। उन्हें वेतन नहीं दिया जाता; वे प्रचार करने या शिक्षा देने का कार्य नहीं करते; वे कलीसिया के लिए पूर्णकालिक कार्य नहीं करते; और वे बहुत कम ही कलीसियाई प्रबन्ध को करना जानते हैं।

गैर-पवित्रशास्त्रीय कलीसियाई शासन किसी भी अन्य चीज़ की तुलना में स्थानीय कलीसियाओं में अत्यधिक समस्याओं का कारण हो सकती है। गलत लोगों के कलीसिया में शासन करने पर परेशानी आती है। यह एक कलीसिया के लिए संघर्ष, समझौते तथा पूर्ण विनाश के द्वार को खोल सकती है। एक गैर-पवित्रशास्त्रीय कलीसियाई शासन ढांचा शैतान का स्वागत करने वाले कालीन की तरह होता है।

मैं जानता हूं कि मैं संस्थागत कलीसियाओं के पास्टरों के साथ साथ गृह कलीसियाओं को भी लिख रहा हूं। कुछ संस्थागत कलीसियाई पास्टर हो सकता है कि ऐसी कलीसियाओं में पास्टर के रूप में कार्य कर रहे हों जहां पहले से ही गैर-पवित्रशास्त्रीय शासन का ढांचा हो और जहां प्राचीन मण्डली में से चुने जाते हों। ये गैर-पवित्रशास्त्रीय शासन के ढांचे संघर्ष के विकसित होने से सामान्यता सावधान नहीं हो सकते।

इस तरह के किसी भी पास्टर के लिए मेरी सलाह है कि परमेश्वर की सहायता से कलीसिया के शासन करने वाले ढांचे में सुधार करे और संभावित रूप से होने वाले अनिवार्य संघर्षों को सहन करे। यदि वह कुछ भी न करें तौभी भविष्य में होने वाले नियमित संघर्ष अनिवार्य हैं। यदि वह स्थानीय रूप से होने वाले संघर्षों को सहने

में सफल होता है, तो वह भविष्य के सभी संघर्षों से बच जाएगा। यदि वह असफल होता है, तो वह एक नई कलीसिया का आरम्भ कर आरम्भ से ही उसे पवित्रशास्त्र के अनुसार ले सकता है।

दर्दनाक होने पर भी, लंबी दौड़ में वह परमेश्वर के राज्य के लिए संभवत: अधिक फल लाएगा। मौजूदा समय में उसकी कलीसिया में शासन करने वाले यदि मसीह के सच्चे शिष्य हैं, तो उसके पास उन्हें सफलतापूर्वक बाध्य करने का अवसर है कि अपने ढांचे में परिवर्तन करें, यदि वह उन्हें पवित्रशास्त्र के अनुसार आवश्यक परिवर्तन करने के लिए बाध्य कर सके।

प्राचीनों की बहुसंख्या

The Plurality of Elders?

कुछ इस ओर संकेत करना पसन्द करते हैं कि प्राचीनों के लिए पवित्रशास्त्र में सदैव बहुवचन में बोला जाता है, अत: यह प्रासंगिक रूप से दिखाता है कि एक प्राचीन/पास्टर/अध्यक्ष का अकेले झुण्ड का नेतृत्व करना पवित्रशास्त्र के अनुसार नहीं है। तथापि, मेरे विचार से यह प्रमाणिक विचार नहीं है। बाइबल इस बारे में भी बताती है कि कलीसिया में एक से अधिक प्राचीन रखवाली का कार्य कर रहे थे; लेकिन यह नहीं बताती है कि वे सभी एक ही मण्डली के थे। उदाहरण के लिये, जब पौलुस ने प्राचीनों को इफिसुस से एकत्रित किया (देखें प्रेरित. 20:17), यह नितान्त संभव है कि वे प्राचीन एक ही शहर से थे जिसमें हज़ारों लोग जुड़े थे (देखें प्रेरित. 19:19)। अत: इफिसुस में बहुत से झुण्ड थे, और यह भी संभव है कि प्रत्येक प्राचीन एक गृह कलीसिया की रखवाली करता था।

पवित्रशास्त्र में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जहां परमेश्वर ने एक कार्य को पूरा करने के लिए समिति को बुलाया हो। जब उसने इस्राएल को मिस्र से छुड़ाना चाहा, तो उसने मूसा नामक एक व्यक्ति को अगुवा होने के लिए बुलाया। अन्यों को मूसा की सहायता के लिए बुलाया गया था, लेकिन सभी उसके अधीन थे, और उसे पसंद करते थे, प्रत्येक सह-समूह पर उनका अलग अलग उत्तरदायित्व था। इस नमूने को पवित्रशास्त्र में बार-बार दोहराया गया है। जब परमेश्वर के पास कोई कार्य होता है, वह एक व्यक्ति को उत्तरदायित्व लेने के लिए बुलाता है, और वह दूसरों को उस व्यक्ति की सहायता करने के लिए बुलाता है।

अत: यह प्रतिकूल प्रतीत होता है कि परमेश्वर एक समान अधिकार वाले प्राचीनों की एक समिति को बुलाएगा कि 20 लोगों की प्रत्येक छोटी गृह कलीसिया में रखवाली करें।

इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक गृह कलीसिया में रखवाली का कार्य केवल एक ही प्राचीन द्वारा किए जाए। तथापि, अर्थ यह है कि यदि कलीसिया में एक से अधिक प्राचीन हैं, तो युवा और आत्मिक रूप से कम परिपक्व प्राचीन (नों) को

बूढ़े या आत्मिक रूप से अधिक परिपक्व प्राचीन के अधीन होना चाहिए। पवित्रशास्त्र के अनुसार, बाइबल स्कूल नहीं बल्कि कलीसियाओं को युवा पास्टरों/प्राचीनों/अध्यक्षों के लिए प्रशिक्षण की भूमि होना चाहिए, और इसी कारण यह संभव है कि गृह कलीसियाओं में कई प्राचीन/पास्टर/अध्यक्ष हों, आत्मिक रूप से परिपक्व लोगों द्वारा आत्मिक रूप से युवा लोगों को अनुशासित करते हुए।

मैंने इस तथ्य को उन कलीसियाओं में भी देखा है, जहां ''समकक्ष'' प्राचीनों द्वारा अध्यक्षता की जाती है। वहां सदैव एक व्यक्ति होता है जिसका पता दूसरों द्वारा लगाया जाता है। या फिर वहां एक व्यक्ति होता है जो प्रभुत्व करता है और अधिकांश निष्क्रिय रहते हैं। अन्यथा वहां संघर्ष होता है। यह एक सच्चाई है कि समितियां सदैव एक प्रमुख व्यक्ति का चुनाव करती हैं। जब समकक्षों का एक समूह कार्य करता है, वे जानते हैं कि उनमें एक अगुवा होना चाहिए। ऐसा ही कलीसिया में है।

इसके अतिरिक्त, 1 तीमुथियुस 3:4-5 में पौलुस द्वारा प्राचीनों के उत्तरदायित्व की तुलना पिताओं के उत्तरदायित्व से की गई है। प्राचीनों को अपने घरानों का प्रबन्ध करना है, अन्यथा वे कलीसिया का प्रबन्ध करने के योग्य नहीं होते हैं। लेकिन दो समकक्ष पिताओं द्वारा प्रबन्ध किये जाने पर एक परिवार कैसा होगा? मुझे संदेह है कि वहां समस्याएं होंगी।

प्राचीन/पास्टर/अध्यक्ष विस्तृत स्थानीय देह में नेटवर्क के रूप में होने चाहिए। अत: सह प्राचीनों के बीच पारस्परिक उत्तरदायित्वता होती है जो कि समस्या होने पर सहायता कर सकते हैं। पौलुस ने एक ''पुरोहिताई'' को लिखा (देखें 1 तीमु. 4:14), जिसमें *पुरोहितों* (प्राचीनों) की एक सभा होनी चाहिए और संभावित रूप से सेवकाई के वरदानों सहित अन्य व्यक्तियों के साथ। यदि वहां एक नींव डालने वाला प्रेरित है, तो स्थानीय देह में समस्या होने पर वह भी सेवा में हो सकता है, ये समस्याएं एक गलती करने वाले प्राचीन का परिणाम हो सकती हैं। जब संस्थागत पास्टर पथभ्रष्ट हो जाते हैं, तो कलीसिया के ढांचे के कारण इसके परिणाम सदा बड़ी समस्याओं रूप में होते हैं। वहां बनाए रखने के लिए इमारत और कार्यक्रम होते हैं। लेकिन पास्टर के पथभ्रष्ट हो जाने पर गृह कलीसियाएं लुप्त हो सकती हैं। सदस्य अन्य देह के साथ आसानी से जुड़ सकते हैं।

सेवा करने का अधिकार
Authority to Serve

क्योंकि परमेश्वर पास्टर को अपनी कलीसिया में आत्मिक और शासन अधिकार देता है, तौभी वह उसे झुंड पर प्रभुत्व करने का अधिकार नहीं देता है। वह उनका प्रभु नहीं है -यीशु है। वे उसके झुंड नहीं हैं, वे परमेश्वर के झुंड हैं।

परमेश्वर के उस झुंड की जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो;

> और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच कमाई के लिये नहीं; पर मन लगाकर। *और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिये आदर्श बनो।* और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं (1 पत. 5:2-4, पर बल दिया गया है)।

प्रत्येक पास्टर को एक दिन मसीह के न्याय आसन के सम्मुख अपनी सेवकाई का लेखा देना होगा।

इसके अतिरिक्त, वित्तीय मामलों में, एक पास्टर/प्राचीन/अध्यक्ष को अकेले कार्य करना नहीं करना चाहिए। यदि किसी भी कारण से नियमित रूप से या कभी कभी धन को एकत्रित किया जाता है, तो देह में अन्य लोगों को उत्तरदायित्व लेना चाहिए जिससे धन का संचालन करने में किसी तरह की कोई अविश्वसनीयता न हो (देखें 2 कुरि. 8:18-23)। यह एक चुना हुआ या नियुक्त किया हुआ समूह हो सकता है।

वेतन प्राप्त करने वाले प्राचीन

Paying Elders

पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीनों/पास्टरों/अध्यक्षों को वेतन दिया जाना चाहिए, क्योंकि वे कलीसिया में पूर्णकालिक सेवक होते हैं। पौलुस ने लिखा,

> जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दोगुने आदर के योग्य समझे जाएं। क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, कि ''दांवने वाले बैल का मुंह न बान्धना'', क्योंकि ''मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक्कदार है'' (1 तीमु. 5:17-18)।

विषय स्पष्ट है - पौलुस *मज़दूरी* शब्द का भी प्रयोग करता है। उसका प्राचीनों के संबन्ध में अस्पष्ट वाक्याश आसानी से समझ में आता है कि अच्छा प्रबन्ध करने वाले दो गुने आदर के योग्य समझे जाएं। इससे पहले के पदों में, पौलुस ने बिना कोई गलती किये विधवाओं को वित्तीय रूप से सहायता दिये जाने के बारे में लिखा, और उसने उसी अभिव्यक्ति का आरम्भ करते हुए लिखा : ''उन विधवाओं का जो सचमुच विधवा हैं, आदर कर'' (देखें 1 तीमु. 5:3-16)। अत:, इस संदर्भ में, ''आदर'' देने का अर्थ वित्तीय रूप से सहायता करना है। अच्छा प्रबन्ध करने वाले प्राचीन दो गुने आदर के योग्य समझे जाएं, जितना विधवाओं को दिया जाता है, उसका दो गुना देते हुए और यदि उनके बच्चे हैं तो उससे भी अधिक देते हुए।

संसार भर में पाई जानेवाली संस्थागत कलीसियाएं अधिकांश चीज़ों में अपने

पास्टर को सहायता देती हैं (यहां तक कि गरीब राष्ट्रों में भी), परन्तु ऐसा लगता है कि संसार भर में पाई जाने वाली अधिकांश गृह कलीसियाएं विशेषकर पश्चिम में, ऐसा नहीं करतीं। इसके लिए, मेरा यह मानना है कि पश्चिमी संसार में गृह कलीसिया से जुड़ने का अधिकांश लोगों का उद्देश्य उनके हृदयों में विरोध का होना है, वे मसीहियत की कम मांगों को चाहते हैं। उनका कहना है कि संस्थागत कलीसियाओं के बंधन से बचने के लिए वे गृह कलीसिया से जुड़ना चाहते हैं, परन्तु वे वास्तव में मसीह के प्रति समर्पण से बचना चाहते हैं। उन्हें वे कलीसियाएं मिल गई हैं जो वित्तीय अधीनता के लिए नहीं कहतीं, तथा वे कलीसियाएं जो उसके विरोध में हैं जिसकी आशा मसीह अपने शिष्यों से करता है। वह जिसका ईश्वर धन है और जिसने अपना धन स्वर्ग में जमा न कर पृथ्वी पर जमा करके इसे प्रमाणित कर दिया है, मसीह का सच्चा शिष्य नहीं है (देखें मत्ती 6:19-24; लूका 14:33)। यदि एक व्यक्ति जो करता है उससे उसके धन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो वह मसीही नहीं है।

वे कलीसियाएं जो बाइबल आधारित होने का दावा करती हैं उन्हें अपने पास्टर की सहायता करने के साथ-साथ गरीबों की देख-रेख करने वाला और मिशन की सहायता करने वाला होना चाहिए। देने के साथ साथ सभी वित्तीय मामलों में, उन्हें संस्थागत कलीसियाओं से बढ़कर होना चाहिए, क्योंकि भुगतान करने के लिए उनके पास न तो कोई इमारत होती है और न कार्यक्रम कर्मचारी। इसमें केवल दस लोग होते हैं जिन्हें एक पास्टर को सहायता देने के लिए दशवांश से अधिक और कुछ करने की आवश्यकता नहीं होती। अपनी आय का 20 प्रतिशत देने वाले लोग एक पास्टर तथा अन्य मिशनरियों को पूर्ण रूप से सहायता दे सकते हैं, जिनका रहने का स्तर अपने पास्टर के समान ही होता है।

पास्टर क्या करते हैं?

What do Pastors do?

औसतन, कलीसिया में आनेवालों से यह पूछने की कल्पना करें, ''निम्नलिखित चीज़ों को करने का कार्य किसका है?''

उद्धार न पाए लोगों के बीच सुसमाचार को बांटने की आशा किससे की गई है? एक पवित्र जीवन जीने? प्रार्थना करने? अन्य विश्वासियों को उपदेश, प्रोत्साहन और सहायता देने? बीमारों के पास जाने? बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा करने? दूसरों के बोझ उठाने? देह की ओर से अपने वरदान पर कार्य करने? स्वयं का इंकार करने, परमेश्वर के राज्य के लिए बलिदान करने? शिष्य बनाने और उन्हें बपतिस्मा देने, उन्हें मसीह की आज्ञाओं का पालन करने की शिक्षा देने?

कलीसिया जानेवाले अधिकांश बिना किसी हिचकिचाहट के यह कहते हुए उत्तर देंगे, ''ये सभी उत्तदायित्व पास्टर के हैं।'' लेकिन क्या ऐसा है?

पवित्रशास्त्र के अनुसार, प्रत्येक विश्वासी से उद्धार न पाए लोगों के बीच सुसमाचार को बांटने की आशा की गई है :

> पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ (1 पत. 3:15)।

प्रत्येक विश्वासी से एक पवित्र जीवन जीने की आशा की गई है :

> पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि ''पवित्र बनो, क्योंकि में पवित्र हूं'' (1 पत. 1:15-16)।

प्रत्येक विश्वासी से प्रार्थना करने की आशा की गई है :

> सदा आनन्दित रहो; निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो (1 थिस्स. 5:16-17)।

प्रत्येक विश्वासी से अन्य विश्वासियों को उपदेश, प्रोत्साहन, और सहायता देने की अपेक्षा की गई है :

> और *हे भाइयो,* हम तुम्हें समझाते हैं, कि जो ठीक चाल नहीं चलते हैं, उन को समझाओ, कायरों को ढाढ़स दो, निर्बलों को संभालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ (1 थिस्स. 5:14, पर बल दिया गया है)।

प्रत्येक विश्वासी से बीमारों से मिलने जाने की आशा की आशा की गई है;

> मैं नंगा था तुम ने मुझे कपड़े पहनाए; मैं बीमार था तुमने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझसे मिलने आए (मत्ती 25:36)।

अधिक उत्तरदायित्व

More Responsibilities

लेकिन यही सब कुछ नहीं है। प्रत्येक विश्वासी से बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा करने की आशा की गई है:

> *और विश्वास करनेवालों* में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा

> लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उन की कुछ हानि न होगी, *वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे* (मर. 16:17-18, पर बल दिया गया है)।

प्रत्येक विश्वासी को अपने सह-विश्वासियों के बोझ को उठाना है:

> तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो (गल. 6:2)।

प्रत्येक विश्वासी से दूसरों के लिए अपने वरदान पर कार्य करने की अपेक्षा की गई है :

> और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिस को भविष्यद्वाणी का वरदान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे। यदि सेवा करने का वरदान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखाने वाला हो, तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; वरदान देनेवाला उदारता से दे। जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे जो दया करे, वह हर्ष से करे (रोमि. 12:6-8)।

प्रत्येक विश्वासी से स्वयं का इंकार करने व सुसमाचार की खातिर बलिदान देने की आशा की गई है:

> उसने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उनसे कहा, *जो कोई* मेरे पीछे आना चाहे, *वह अपने आपे से इन्कार करे* और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपने प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा'' (मरकुस 8:34-35, पर बल दिया गया है)

और प्रत्येक विश्वासी से शिष्य बनाने और बपतिस्मा देने की अपेक्षा की गई है, उन्हें मसीह की आज्ञाओं का पालन करने की शिक्षा देते हुए :

> इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसे ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा *और उन्हें सिखाएगा* वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा (मत्ती 5:19, पर बल दिया गया है)।
>
> समय के विचार से तो *तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था,* तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा

> फिर से सिखाए? और ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए (इब्रा. 5:12, पर बल दिया गया है)।
>
> इसलिये तुम जाकर *सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो* और उन्हें *सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है,* मानना सिखाओ; और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:19-20, पर बल दिया गया है)।[61]

ये सभी उत्तरदायित्व प्रत्येक विश्वासी को दिये गए हैं, तौभी अधिकांश कलीसिया में जाने वालों का सोचना है कि ये कार्य केवल पास्टर को दिये गए हैं! इसका कारण संभवत: पास्टरों का यह सोचना है कि ये कार्य केवल उनके उत्तरदायित्व हैं।

अत: पास्टरों से क्या करने की आशा की जाती है?

So What are Pastors Supposed to do?

यदि ये सभी उत्तरदायित्व प्रत्येक विश्वासी को दिये गए हैं, तब पास्टरों से क्या करने की आशा की जाती है? *सरल सी बात है, उन्हें पवित्र विश्वासियों को उन सब चीज़ों को करने हेतु तैयार करने के लिए बुलाया गया है* (देखें इफि. 4:11-12)। *उन्हें उन पवित्र विश्वासियों को मसीह की सभी आज्ञाओं का पालन करने की शिक्षा देने को बुलाया गया है* (मत्ती 28:19-20), *निर्देशों और उदाहरण के द्वारा* (देखें 1 तीमु. 3:2; 4:12-13; 5:17; 2 तीमु. 2:2; 3:16-4:4; 1पत. 5:1-4)।

पवित्रशास्त्र इसे स्पष्ट नहीं कर सकेगा। पास्टर की बाइबल संबन्धी भूमिका रविवार प्रात: की कलीसिया सेवा के लिये जितना अधिक हो सके लोगों को एकत्रित करना नहीं है। यह ''हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करना है'' (कुलु. 1:28)! बाइबल आधारित पास्टर लोगों के कानों की खुजली को नहीं खुजलाते (2 तीमु. 4:3); वे परमेश्वर के वचन के आधार पर ही उपदेश देते, समझाते व सुधारते हैं (देखें 2 तीमु. 3:16-4:4)।

पौलुस ने तीमुथियुस को लिखे अपने पहले पत्र में पास्टर की योग्यताओं को लिखा है। इसमें पन्द्रह में से चौदह उसके चरित्र से जुड़ी हैं, इस ओर संकेत करते हुए कि उसकी जीवन प्रणाली सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है :

> यह बात सत्य है, कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले

61. यदि यीशु ने अपने शिष्यों से उनके शिष्यों को उस प्रत्येक चीज़ का पालन करने की अपेक्षा की थी जो उसने उन्हें सिखाया था, तो उन्होंने परिणामस्वरूप अपने शिष्यों को अपने लिए शिष्य बनाना, उन्हें बपतिस्मा देते हुए वह सब मानने की शिक्षा दी होगी जो मसीह ने आज्ञा दी थी। अत: शिष्य बनाना, उन्हें बपतिस्मा देना और सिखाना एक ऐसी आज्ञा रही होगी जिससे प्रत्येक शिष्य बंधा था।

> काम की इच्छा करता है। सो चाहिए कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मार पीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो, और न झगड़ालू और न लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लड़केवालों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो। (जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्यों करेगा)। फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए। और बाहर वालों में भी उसका सुनाम हो ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए (1 तीमु. 3:1-7)।

इन योग्यताओं की उनके साथ तुलना करते हुए जिन्हें प्राय: संस्थागत कलीसियाओं द्वारा सूचीगत किया जाता है जो कि नये पास्टरों की खोज कर रहे हैं, यह अधिकांश कलीसियाओं की प्राथमिक समस्या को प्रगट करता है। वे एक मैनेजर/मनोरंजन करने वाले/गतिविधि और कार्यक्रम निदेशक/धन-वृद्धिकर्त्ता/प्रत्येक का मित्र/वर्क होर्स (मशीन) की तलाश में हैं। वे चाहते हैं कि कोई ''कलीसिया की सेवकाई को चलाए।'' तथापि, एक बाइबल आधारित अध्यक्ष उपरोक्त सभी चीज़ों के साथ साथ एक महान चरित्र का व्यक्ति, मसीह के प्रति समर्पित और एक सच्चा सेवक होता है, क्योंकि उसका लक्ष्य अपना पुनरूत्पादन करना होता है। वह अपने झुण्ड से यह कहने के योग्य होना चाहिए, ''तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं'' (1 कुरि. 11:1)।

पास्टर के कार्यभार के संबन्ध में अधिक जानकारी के लिये प्रेरित 20:28-31; 1 तीमु. 5:17-20; और तीतु. 1:5-9 भी देखें।

डीकन का कार्य

The Office of Deacon

अन्त में, मैं संक्षिप्त रूप में डीकन के बारे में बताना चाहता हूं। डीकन का कार्यभार स्थानीय कलीसिया का एक अन्य ऐसा कार्य है जो पांच गुना सेवकाई के वरदानों में से नहीं है। डीकन का प्राचीनों के समान कलीसिया पर कोई शासकीय अधिकार नहीं होता है। *डीकन* शब्द यूनानी भाषा के *डायकानोस* से अनुवादित शब्द है जिसका अर्थ ''सेवक'' है।

यरूशेलम की कलीसिया में विधवाओं को भोजन खिलाने के लिए नियुक्त किये गए सात व्यक्तियों को सामान्यता प्रथम डीकन के रूप में माना जाता है (देखें प्रेरित. 6:6-1)। उन्हें मण्डली द्वारा चुना व प्रेरितों द्वारा नियुक्त किया गया था। उनमें से

दो, फिलिप्पुस और स्तिफनुस को परमेश्वर द्वारा सामर्थशाली सुसमाचार प्रचारकों के रूप में पदान्नति दी गई थी।

1तीमुथियुस 3:8-13 और फिलिप्पियों 1:1 में डीकन के बारे में बताया गया है। इस कार्य में पुरुष या स्त्री किसी को भी रखा जा सकता है (देखें 1तीमु. 3:11)।